प्रर्थना की शक्ति हमारी नेकनीयती पर निर्भर करती है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून शनिवार 16 मई 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

मामला अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण

ऐसे में इंटरनेट ही उनके लिए सामाजिक जुड़ाव का अकेला जरिया है। बीते 40 दिनों में उनका डार्क वेब पर चले जाना बिल्कुल संभव है। कुछ दिक्कत हमारे समाज के साथ भी है कि उसने बंधन तोड़ने वाली तकनीकें तो अपना ली हैं, पर आपस में जुड़ने का कोई सिस्टम नहीं बनाया।

आशीष शाह।

इंटरनेट पर बने एक ग्रुप में दिल्ली के कुछ किशोरों द्वारा अपनी सहपाठी लड़कियों को लेकर अश्लील बातें करने, उनकी आपत्तिजनक तस्वीरें शेयर करने और उनके साथ सामूहिक बलात्कार की योजना बनाने का मामला अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। सच कहें तो इस प्रकरण के जरिए कोरोना महामारी के इस दौर में समाज की एक और बड़ी बीमारी उजागर हुई है, जिस पर शैक्षिक ढांचे के अलावा परिवारों में भी गंभीर विचार–विमर्श होना चाहिए।

ब्यौरे में जाएं तो दक्षिण दिल्ली के कुछ स्कूली लड़कों ने 'बॉयज लॉकर रूम' नाम से एक इंस्टाग्राम चौट ग्रुप बना रखा था, जिसमें पिछले एक महीने से वे न सिर्फ अपनी परिचित लड़कियों की आपत्तिजनक तस्वीरें डालते थे बल्कि बाकायदा उनसे गैंग रेप करने के प्रस्ताव पर भी चर्चा कर रहे थे। बीते सोमवार यानी 4 मई को जब दक्षिण दिल्ली की ही एक लड़की ने सोशल मीडिया पर इस ग्रुप का एक स्क्रीनशॉट साझा करके इनकी करतूतें उजागर कीं तो पूरा शहर सकते में आ गया।

इस मामले को लेकर दिल्ली महिला आयोग भी सक्रिय हुआ और उसने दिल्ली पुलिस और इंस्टाग्राम को नोटिस जारी कर दिया। दिल्ली पुलिस ने इस मामले में एक किशोर को गिरफ्तार किया और जांच शुरू कर दी है। उसने फोटो शेयरिंग ऐप से उस समूह में शामिल सभी लोगों के विवरण साझा करने को कहा है। इस बीच इस ग्रुप से अलग, इंस्टाग्राम पर ही एक अन्य ग्रुप में खुद पर बलात्कार का आरोप लगने के बाद गुरुग्राम के एक लड़के ने पूछताछ के डर से आत्महत्या कर ली। कुछ साइबर एक्सपर्ट्स का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान बच्चे न तो अपने घरों से बाहर निकल पा रहे हैं, न ही वे अपने परिवार में ज्यादा घुलते–मिलते हैं। ऐसे में इंटरनेट ही उनके लिए सामाजिक जुड़ाव का अकेला जरिया है। बीते 40 दिनों में उनका डार्क वेब पर चले जाना बिल्कुल संभव है। कुछ दिक्कत हमारे समाज के साथ भी है कि उसने बंधन तोड़ने वाली तकनीकें तो अपना ली हैं, पर आपस में जुड़ने का कोई सिस्टम नहीं बनाया। नई तकनीकें नया लोकाचार भी मांगती हैं।

इस जरूरत को समझे बगैर हम एक दोहरा जीवन जिए जा रहे हैं। सारी पोर्न साइट्स बच्चों को उपलब्ध हैं लेकिन सेक्स एजुकेशन की बात उठते ही भारतीय संस्कृति खतरे में पड़ जाती है। लड़के–लड़कियों के स्वस्थ रिश्तों को लेकर मां–बाप ही नहीं, टीचर भी कोई बात नहीं करते। प्रेमहीन सेक्स कितनी बड़ी यातना है, यह जाने बगैर बच्चे इसके बाजार में भरमाए घूम रहे हैं। इंटरनेट पर रेप का महिमामंडन करने और स्त्री को उपभोग की वस्तु के रूप में पेश करने वाली सामग्री भरी पड़ी है। इस पर नियंत्रण का कोई तरीका अब तक नहीं ढूंढा जा सका है और शायद यह मुमकिन भी नहीं है। यह अंधा कुआं देश की ताजादम पीढ़ी को निगल जाए, उसके पहले हमें घर के लड़कों को बचाने की कोशिशें तेज कर देनी चाहिए।

प्रभु की भी मानों

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। जब भगवान अपना स्वरूप प्रकट करता है तब न जाने उसके कितने बंदों के अंदर एक साथ वो दीप्ति, वो प्रकाश प्रकाशित होने लगता है, जो ईश्वरीय प्रकाश कहा जाता है। संसार को जगाने के लिए, संसार में फिर से वो लहर पैदा करने के लिए किसी न किसी रूप में परमात्मा अपना स्वरूप प्रकट करता है। इसलिए कहा जाता है कि हर किसी में प्रभु का कोई न कोई अंशावतार अवश्य है। कोई 14 कला तो कोई 12 कला का अवतार है लेकिन कृष्ण षोडश कला वाले सम्पूर्ण अवतार हैं। प्रभु श्रीकृष्ण सम्पूर्ण रूप लेकर प्रकट हुए। कृष्णं वन्दे जगतगुरुं' अर्थात श्रीकृष्ण जगत के गुरू हैं। वे सारे संसार के सामने शिक्षा दे रहे हैं कि यह अन्दाज जीवन जीने का महान अंदाज है।

संपादकीय

सब कुछ बदलेगा

जीवन शैली, सामाजिक चलन, कार्य प्रणालियां और स्वास्थ्य क्षेत्र, इन सभी में कोविड–19 संकट के कारण परिवर्तन आएगा। देखते हैं कि इस बदलाव का रूप और प्रसार कैसा होता है। हाथ धोने और सामाजिक दूरी बनाए रखने जैसी प्रथाएं किस हद तक हमारे जीवन का हिस्सा बन पाती हैं। प्रौद्योगिकी द्वारा संभव बनाई गई दूरवर्ती बैठकों के चलते और यात्राएं कम करने से किस हद तक हमारी कार्यशैली बदलेगी। टेलीमेडिसिन से कैसे स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार होगा। बीमारियों की सूचना और उनका निरीक्षण कितना प्रभावशाली हो सकेगा और स्वास्थ्य पर होने वाला व्यय किस परिमाण में बढ़ सकेगा। मुझे दृढ़ विश्वास है कि हम इस संकट से बहुत कुछ सीख सकेंगे। इन सुधारों ने पूर्वी एशिया के देशों को कोविड–19 से प्रभावशाली रूप से लड़ने में सहायता की है। चीन से व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक रूप से जुड़े होने के बावजूद और प्रौढ़ व्यक्तियों तथा प्रवासियों की जनसंख्या अधिक होने के बावजूद इन देशों में इस महामारी का प्रभाव कम रहा है। आने वाले दिनों में जो शोध होगा, वह हमें और जानकारी देगा। चेहरे को ढंकने जैसी स्वास्थ्यकर प्रथाओं और सुदृढ़ सामाजिक स्वास्थ्य प्रणालियों के जरिए उन्हें कोरोना से लड़ने में मदद मिली। इसमें सार्स, एच1एन1 और मर्स जैसी बीमारियों से निपटने के क्रम में किए गए उपाय काम आए। सार्स और फिर एच1एन1 की वजह से पूर्वी एशिया के देशों ने क्षेत्रीय सहकारिता को और बढ़ाया। अभूतपूर्व इसलिए क्योंकि प्रायः इन मामलों में एक वाक्य पर सहमति बनने में भी सालों लग जाते हैं।

नागरिक सार्वजनिक शौचालयों के प्रयोग में अतिरिक्त सावधानी और स्वच्छता बरतते हैं। बार–बार हाथ धोना भी वहां चलन में आ गया है। सार्स ने कामकाज और यात्राओं को लेकर भी सोचने पर मजबूर किया।

महामारी के सबक

डॉ. इंदु भूषण।

2003 में पूर्वी एशिया में जब सार्स का संकट अपने चरम पर था, तब वियतनाम की स्वास्थ्य मंत्री सुश्री ट्रेन थी तृंग चिएन ने मुझसे कहा था– 'मि. भूषण, समुद्र में ज्वार के समय ही मछली पकड़ी जाती है!' इस तरह उन्होंने चर्चिल की उस उक्ति को प्रासंगिक रूप दिया कि किसी भी संकट को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। उन दिनों मैं एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के स्वास्थ्य संबंधी मामलों की शाखा का प्रमुख था और सार्स से निपटने की योजनाओं के निर्माण और उसके संचालन की जिम्मेदारी संभाल रहा था।

सच कहूं तो जिस सार्स को उस समय स्वास्थ्य के लिए एक भयानक संकट के रूप में देखा गया वह फैलाव और दुष्प्रभाव के मामले में कोविड –19 के सामने कुछ भी नहीं था। उससे 29 देशों के महज 8000 लोगों को संक्रमण हुआ और 774 लोगों की जानें गईं। फिर भी, उसने पूर्वी एशिया के नागरिकों और सरकारों को जागरूक कर दिया और उन्होंने इस संकट से बहुत कुछ सीखा। सार्स के बाद कई पूर्वी एशियाई देशों की जीवनशैली में प्रत्यक्ष बदलाव आया। चीन, हांगकांग, ताइवान, जापान और दक्षिण कोरिया में सार्वजनिक स्थानों पर चेहरे पर मास्क लगाना आम चलन हो गया, जो सार्स

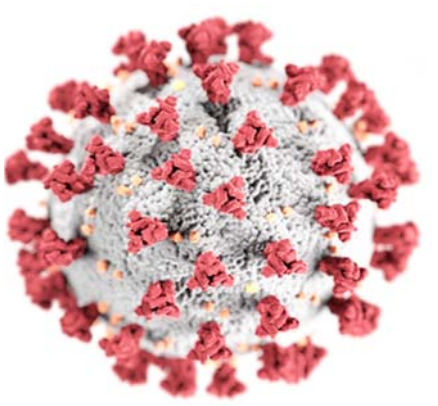

का प्रकोप हटने पर भी जारी रहा। आज भी जिन लोगों को सर्दी या खांसी होती है, वे दफ्तर में मास्क लगाकर आते हैं।

सार्वजनिक स्थानों में सतहों को छूने के लिए कई नियम बने। पूर्व एशिया में लोग लिफ्ट का बटन भी उंगली के पोरों से स्पर्श करने की बजाय, उंगली के जोड़ से दबाते हैं। नागरिक सार्वजनिक शौचालयों के प्रयोग में अतिरिक्त सावधानी और स्वच्छता बरतते हैं। बार–बार हाथ धोना भी वहां चलन में आ गया है। सार्स ने कामकाज और यात्राओं को लेकर भी सोचने पर मजबूर किया। संक्रमण के दौरान यात्रा पर लगे प्रतिबंधों की वजह से एशियाई डिवेलपमेंट बैंक ने कर्ज संबंधी समझौते वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए किए। ऐसी बैठकें आमने–सामने होने वाली बैठकों जितनी ही कामयाब साबित हुईं। हमें अहसास हुआ कि व्यवसाय से जुड़ी यात्राओं को भी कम किया जाए। पर इन सबके अलावा सार्स संकट का सबसे बड़ा असर यह हुआ कि विभिन्न देशों की सरकारों ने स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश के महत्व को समझा। इसके पहले सरकारें डिवेलपमेंट बैंकों से ऋण लेने की बजाय द्विपक्षीय अनुदान को प्रधानता देतीं थीं। वे बुनियादी सुविधाओं के लिए ऋण लेने को प्राथमिकता देती थीं। ज्यादातर देश हार्ड सेक्टर के लिए हार्ड मनी और सॉफ्ट सेक्टर के लिए सॉफ्ट मनी चाहते थे। लेकिन सार्स संकट के बाद मानसिकता बदल गई। कई मुल्कों को अहसास हुआ कि वे हेल्थ पर बेहद कम खर्च कर रहे हैं और इसके लिए द्विपक्षीय स्तर पर मिलने वाले अनुदानों से काम नहीं चलने वाला।

चीन ने अपनी स्वास्थ्य प्रणाली की कमियों को पहचाना और इसके लिए दो रास्ते चुने। एक ओर उसने सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर किया, दूसरी ओर नागरिकों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए सामाजिक आरोग्य बीमा योजनाएं बनाईं, ठीक आयुष्मान भारत योजना की तरह। कुछ ही सालों में वहां स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला सरकारी खर्च तिगुना हो गया तो देश की तकरीबन सारी जनसंख्या को स्वास्थ्य बीमा मिला।

सूडोकु नवताल- 5349

★★★★★ कठिनतम

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5348 का हल

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5

अपना ब्लॉग

समझौतों की रूपरेखा

मोहन। आसियान और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के समन्वय से अनेक प्रणालियों और समझौतों की रूपरेखा तैयार की ताकि आने वाले समय में स्वास्थ्य संकटों की शिनाख्त करके उनसे जुड़ी जानकारी आपस में बांटी जा सके। सार्स के चलते विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिनियमों (आईएचआर) को संशोधित किया गया ताकि वे और कारगर बन सकें। नए नियमों के तहत डब्ल्यूएचओ किसी भी सदस्य देश से कोई सूचना लेकर उसे पड़ोसी देशों से साझा करने के लिए अधिकृत हो गया। 2003 से लेकर 2005 तक के 18 महीनों के भीतर ये अधिनियम सभी सदस्य देशों द्वारा अनुमोदित कर दिए गए जो कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी। लाओस और कंबोडिया जैसे छोटे देशों ने भी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर निवेश बढ़ाया, अपनी निरीक्षण और सूचना की योग्यता का विस्तार किया।